प्रातः क्लास 21-12-68 ओमशान्ति पितामही शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ रोज2 समझाते हैं। यह तो बच्चों को समझाया है ज्ञान भक्ति वैराग्य।। यह सृष्टि का चक्र कैसा बना हुआ है। तुम बच्चों को हद और बेहद से पार जाना है। बाप तो हद और बेहद से पार है। उनका भी अर्थ समझाना चाहिए। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। वह भी टापिक समझाई है कि ज्ञान भक्ति पीछे है वैराग्य। ज्ञान कहा जाता है दिन को। जब कि नई दुनिया है। उसमें भक्ति ज्ञान है नहीं। वह है हद की दुनिया। क्योंकि वहां बहुत थोड़े होते हैं। फिर अस्ते2 वृद्धि को पाते हैं। आधा कल्प बाद भक्ति शुरू होती है। वहां सन्यास धर्म होता ही नहीं। सन्यास वा त्याग होता ही नहीं। फिर बाद में सृष्टि की वृद्धि होती है। ऊपर से आत्मायें आती हैं। यहां वृद्धि होती रहती है। हद से शुरू होकर बेहद में जाती हैं। बाप को तो हद और बेहद से पार दृष्टि जाती है। जानते हैं हद में कितने थोड़े बच्चे होते हैं फिर रावण राज्य में कितने वृद्धि हो जाते हैं। हद में 9लाख और बेहद में है 500करोड़। कहां 9लाख कहां 500 करोड़। अभी तुमको हद बेहद से भी पार जाना है। सतयुग में कितनी छोटी दुनिया है। वहां सन्यास वा वैराग्य आदि होता ही नहीं बाद में फिर द्वापर से लेकर और धर्म शुरू होता है। सन्यास धर्म भी होता है। जो घर-बार का सन्यास करते हैं। सभी को जानना तो चाहिए ना। उनको कहा जाता है हठयोगी। और हद का सन्यास। सिर्फ घर-बार छोड़ जंगल में जाते हैं। द्वापर से भक्ति शुरू होती है। ज्ञान तो होता ही नहीं। ज्ञान माना सतयुग त्रेता। सुख। भक्ति माना अज्ञान और दुःख। यह अच्छी रीत समझना होता है। फिर दुःख और सुख से परे जाना है। हद बेहद से पार। मनुष्य जांच करते हैं ना कहां तक समुद्र है, आसमान है, बहुत कोशिश करते हैं परन्तु अन्त पा नहीं सकते हैं। एरोपलेन में जाते हैं इसमें भी इतना तेल चाहिए ना जो फिर वापस भी लौट सके। बहुत दूर तक जाते हैं। परन्तु बेहद में जा नहीं सकते। हद तक ही जावेंगे। तुम बच्चे हद और बेहद से भी पार जाते हो। अभी तुम जो समझ सकते हो पहले नई दुनिया में हद है। बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। उनको सतयुग कहा जाता है। तुम बच्चों की बुद्धि में रचना के आदि मध्य अन्त की नालेज होनी चाहिए। यह नालेज और कोई में है नहीं। तुमको समझाने वाला बाप है जो बाप हद और बेहद से पार है। और कोई समझा न सके। रचना के आदि मध्य अन्त का राज समझाते हैं। फिर कहते हैं इससे भी पार जाओ। वहां तो कुछ भी रहता नहीं। असमान ही आसमान है। उनको कहा जाता है हद बेहद से भी पार। कोई अन्त नहीं पा सकते। कहते बेअन्त2, कहना तो सहज है परन्तु बेअन्त का अर्थ समझना चाहिए ना। अभी तुमको बाप समझ देते हैं। बाप कहते हैं मैं जो कुछ जानता हूं बेहद को भी जानता हूं: फलाने2 धर्म फलाने2 समय पर स्थापन हुई हैं। दृष्टि जाती है सतयुगी हद तरफ। फिर जहां कुछ भी नहीं। फिर हम घर चले जावेंगे। सूर्य चन्द के ऊपर हम जाते हैं। जहां हमारा शांतिधाम स्वीटहोम है। यूं तो सतयुग भी स्वीटहोम है। शान्ति भी है तो साथ सुख भी है। दोनों ही है। घर जावेंगे तो वहां सिर्फ शान्ति होगी। सुख का नाम नहीं होगा। अभी तुम शान्ति भी स्थापन कर रहे हो। और सुख भी स्थापन कर रहे हो। वहां शान्ति भी है, सुख का राज्य भी है। शिवतन में तो सुख की बात नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में यह सभी बातें हैं। दुनिया के मनुष्य नहीं जानते। आधा कल्प तुम्हारा राज्य चलता है। फिर आधा कल्प बाद रावण राज्य आता है। अशान्ति है ही 5विकारों से। 5000वर्ष तुम राज्य करते हो। फिर 2500वर्ष बाद रावण राज्य होता है। उन्होंने तो लाखों वर्ष लिख दिया है। कुछ जैसे बुद्धु बना दिया है। 5000वर्ष के कल्प को लाखों वर्ष कह देना बुद्धुपना कहेंगे ना। जरा भी सभ्यता नहीं है। देवताओं में कितनी दैवी सभ्यता थी। वह अभी असभ्यता हो पड़ी है। कुछ नहीं जानते। आसुरी गुण आ गये हैं। आगे तुम कुछ भी नहीं जानते थे। काम कटारी चलाकर आदि मध्य अन्त दुःखी बना देते हैं। जैसे इनको कहा ही जाता है रावण सम्प्रदाय। दिखाया है राम ने बन्दर सेना ली। अभी भगवान रामचन्द्र तो था, वहां फिर बन्दर कहां से आये। और फिर कहते हैं राम की सीता चुराई गई। ऐसी गन्दगी की बातें तो --

वहां होती ही नहीं। जीव-जन्तु जानवर आदि 84 लाख योनियां जितनी यहां हैं उतनी सतयुग त्रेता में थोड़ेही होंगी। यह सारा वेहद का ड्रामा बाप बैठ समझाते हैं। बच्चों को बहुत दूरनदेशी बनना है। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। मनुष्य होकर और नाटक को नहीं जानते। अभी तुम समझते हो सबसे बड़ा कौन है। ऊंच ते ऊंच भगवान ···(श्लोक) अभी तुम्हारे सिवाय और कोई मनुष्य की बुधि में नहीं हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। बाप समझाते हैं हमारी बुधि कहां तक जाती है। हद और वेहद दोनों का राज समझाते हैं। इन से पार कुछ भी है नहीं। वह है तुम्हारे रहने का स्थान। जिसको ब्रह्माण्ड अथवा ~~महतत्व~~ ब्रह्म महतत्व कहते हैं। तुम यहां जैसे आकाश तत्व में बैठे हो। इनमें कुछ देखने में आता है क्या। नाम रख दिया है आकाश। है तो पोलार ही पोलार। रेडियो में भी कहते हैं अकाशवाणी। अभी यह अकाश तो बेअन्त है। अन्त पा नहीं सकते। तो अकाशवाणी कहने से मनुष्य क्या समझेंगे। यह जो मुख है वह है पोलार। इन से वाणी निकलती है। मुख से आवाज़ निकलता है। यह 5 तत्वों का शरीर है ना। तो इस मुख से आवाज निकलता है। इसलिये रेडियो में अकाशवाणी कहा जाता है। यह तो कामन बात है। और कोई आंख नाक कान से वाणी निकलेगी क्या। मुख से ही आवाज निकलता है जिसको अकाशवाणी कहा जाता है। बाप को भी इस ~~सब~~ अकाश द्वारा वाणी चलानी पड़ी। तुम बच्चों को अपना भी सारा राज बताते हैं। तुम को निश्चय होता है। है बहुत सहज। जैसे हम आत्मा हैं वैसे बाप परमपिता परमात्मा है। ऊंच ते ऊंच आत्मा है ना। सभी को आत्मा 2 पार्ट मिला हुआ है। सबसे ऊंच ऊंच पार्ट इनको (ल0नारा0) को मिला हुआ है। यह खेल है ना। नई दुनिया में रहने वालों में नम्बरवार कौन विजय माला में देखो। ऊपर में है फूल। फिर प्रवृति मार्ग का युगल मेला फिर नम्बरवार माला। देखो कितनी थोड़ी है। फिर सृष्टि बढ़ते 2 कितनी बड़ी हो जाती है। अभी कहेंगे 500 करोड़ दाना अर्थात आत्माओं की माला। सभी है पढ़ाई। बाप जो समझाते हैं उनको अच्छी रीत बुधि में धारण करो। झाड़ की डिटेल तो तुम सुनते रहते हो। बीज ऊपर में है। यह वैराईटी झाड़ है। इनकी आयु कितनी है। झाड़ वृधि को पाता रहता है। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज सभी तुम बच्चों को समझाया है सारा दिन बुधि में यही रहे। इस सृष्टि रूप कल्प वृक्ष की आयु बिलकुल एक्युरेट है। 5000 अर्ब से एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। तुम बच्चों के बुधि में अभी कितनी नालेज हैं। जो अच्छे मजबूत हैं। मजबूत तब होंगे जब पवित्र होंगे। इस नालेज को धारणा के लिये सोने का बर्तन चाहिए। फिर ऐसा सहज हो जावेगा जैसे कि बाजा के लिये सहज है। फिर तुम को कहेंगे मास्टर नालेजफुल। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार माला का दाना बन जावेगा। ऐसी 2 बातें बाप बिगर कोई समझा न सके। यह आत्मा समझा रही है। बाप भी इस तन द्वारा ही समझाते हैं। न कि देवता के शरीर से। बाप एक ही बार आकर गुरु बनते हैं। फिर बाप को ही पार्ट बजाना होता। 5000 वर्ष बाद आकर पार्ट बजावेंगे। बाप समझाते हैं ऊंच ते ऊंच मैं हूं। फिर है जैसा जो आदि में महाराजा महारानी हैं वह फिर अन्त में जाकर आदि देव बनेंगे। यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुधि में है। तुम कहां भी समझाओ तो सुन्डर खावेंगे। यह तो ठीक बताते हैं। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप ही नालेजफुल है। उनके बिगर कोई नालेज दे नहीं सकता। यह सभी बातें धारण करनी है। परन्तु बच्चों को धारणा होती नहीं हैं। है बहुत सहज। कोई बुधि पुरुषार्थ नहीं हैं। एक तो गाद की माला चाहिए दूसरे पवित्र बर्तन में रत्न रखने। बाप है ऊंच ते ऊंच रत्न। बाबा तो व्यापारी था ना। बहुत अच्छा हीरा माणिक आदि आता था तो चांदी के डब्बी कपुस आदि आदि में अच्छी रीत रखते थे। जो कोई भी बोलेंगे तो कहेंगे यह तो कोई फर्स्ट क्लास चीज है। यह भी ऐसे है। अच्छी चीज अच्छी बर्तन में शोभती है। तुम्हारी ~~कान~~ कान सुनती है उन में धारण होनी है। पवित्र होगा, बुधि योग बाप से होगा तो धारणा अच्छी होगी। नहीं तो सभी निकल जायेंगे। आत्मा का रूप भी कितना छोटा है। इसमें उन में कितना भरा हुआ है। कितना अच्छा शुध बर्तन चाहिए। कोई संकल्प भी न उठे। उल्टे सुल्टे संकल्प सभी बन्द हो जानी चाहिए। सभी तरफ से बुधि योग हटाना है। मेरे साथ योग लगाते 2

29-12-52

वर्तन सोना बना दो जो स्थ ठहर सके। फिर दूसरों को दान करते रहो। भारत को महादानी माना जाता है। वह धन दान तो बहुत करते हैं। परन्तु यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान। देह सहित जो कुछ है सभी छोड़कर एक के साथ बुद्धि का योग रहे। हम तो बाप के हैं। इसमें ही मेहनत लगती है। एकाउन्टेंट तो बाप बता देते हैं। पुरुषार्थ करना बच्चों का काम है। तब ही इतना ऊंच पा सकेंगे। कोई भी उल्टा सुल्टा विकल्प न आये। बाप है ज्ञान का सागर। हद बेहद से पार। सभी बैठ समझाते हैं। तुम समझते हो बाबा हमको देखते हैं, परन्तु मैं तो हद और बेहद से ऊपर चला जाता हूं। मैं रहने वाला भी वहां का हूं। तुम भी हद बेहद से पार चले जाओ। संकल्प विकल्प कुछ भी न आये। इसमें मेहनत चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कर्म कार डे दिल साफ डे। गृहस्थी जितना उठाते हैं उतना घर में रहने वाले भी नहीं उठाते हैं। सेन्टर चलाने वाले, मुरली चलाने वाले भी नापास हो जाते हैं। और पढ़ने वाले ऊंच चले जाते हैं। आगे चल तुमको सब मालूम पड़ता जायेगा। बाबा बिल्कुल ठीक बताते हैं। हमको जो पढ़ाती थी उनको माया खा गई। महारथी को माया एकदम हप कर गई। है नहीं मायावी ट्रैटर बन जाते हैं। विलायत में भी ट्रैटर बन जाते हैं। कहां2 जाकर शरण लेते हैं। जो पावरफुल होते हैं उस तरफ चले जाते हैं। इस समय तो मौत सामने है ना। तो बहुत ताकत वाले पास जायेंगे। अभी तुम समझते हो बाप ही पावरफुल है। बाप है सर्वशक्तिवान। हमको सिखलाते2 सारे विश्व का मालिक बनाये देते हैं। वहां सभी कुछ मिल जाता है। कोई अप्राप्त वस्तु नहीं होती जिसके प्राप्ती के लिये पुरुषार्थ करें। वहां कोई ऐसी चीज होती नहीं जो तुम्हारे पास न हो। सो फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही पद पाते हैं। बाप बिगर ऐसी बातें कोई नहीं जानते हैं। सभी हैं पुजारी। भल बड़े2 शंकराचार्य आदि हैं। बाबा उन्हों को महिमा भी सुनाते हैं पहले पवित्रता की ताकत से भारत को अच्छा थाने निर्मल बनते हैं। सो भी जब सतोप्रधान थे। अभी तो तमोप्रधान हैं। उनमें क्या ताकत रखी है। शंकराचार्य खुद दिखाते हैं हम पुजारी हैं। सभी चित्र आदि रखते हैं। पूज्य एक भी नहीं हैं। अभी तुम जो पुजारी थे सो फिर पूज्यपनेने पुरुषार्थ कर रहे हो। बाप ने समझाया है तुम पहले अव्यभिचारी पुजारी थे। एक को ही पूजा करते थे। पहले2 जब भक्तिमार्ग शुरू होता है तब तुम पूज्य से पुजारी बनते हो। हिस्ट्री जागराफी फिर रिपीट होती है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। है तो सेकण्ड का। बुद्धि में धारण रहे और तुम समझाते रहो। बाप ही सारे झाड़ के आदि मध्य अन्त का राज बताते हैं। बच्चों को भी बहुत मीठा बनने का है। युध है ना। माया के तूफान भी बहुत आते हैं। यह सहन करना पड़ता है। बाप की याद में रहने से तूफान भी चले जायेंगे। हाथ मताई का खेल दिखाते हैं ना। मुहरा डालते थे और माया चली जाती थी। मुहरा निकलने से ही माया आ जाती थी। छुईमुई होती है ना। हाथ लगाओ तो मुरझाये जाती है। माया बड़ी तीखी है। इतना ऊंच पढ़ाई पढ़ते2 बैठे2 गिरा देती है। इसलिये बाप समझाते रहते हैं अपने को भाई2 समझो। तो फिर हद बेहद से पार चले जायेंगे। शरीर ही नहीं है तो फिर दृष्टि कहां जायेगी। इतनी मेहनत करनी है। सुनकर पास नहीं हो जाना है। कल्प कल्प तुम्हारा पुरुषार्थ चलता है। और तुम आ के भाग्य पाते हो। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ सभी भूलो। बाबा जो कुछ नहीं पढ़े हो सब सुनो और याद करो। उनको कहा जाता है भक्ति मार्ग का भुसा। वह पढ़ते2 मनुष्य भुसे जैसे बन गये हैं। तुम राजऋषि हो ना। जटाएं खुली हुआ हो और मुरली चलाओ। साधु सन्त आदि जो सुनाते हैं वह सब मनुष्यों की मुरली। यह है बेहद की बाप की मुरली। सतयुग त्रेता में तो ज्ञान की मुरली की दरकार नहीं है। वहां ज्ञान की भक्ति की दरकार नहीं है। यह ज्ञान तुमको मिलता ही एक संगमयुग पर है। बाप ही देने वाला है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग और नमस्ते।